International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 275-279

छत्तीसगढ़ में समाचार चैनलों का क्रमिक विकास: एक अध्ययन

[1] राजेश कुमार, [2] डॉ0 शाहिद अली

[1] पीएच.डी शोध छात्र, जनसंचार विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, जनसंचार. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

देश में समाचार चैनलों का विकास 1990 के बाद नई उदारीकरण की नीति के बाद हुआ। हांगकांग की कंपनी हैचिसन वैमपाओ ने भारतीय उपमहाद्वीप को कवर करने वाले उपग्रह में कुछ ट्रांसपोंडर खरीदे और भारत में मीडिया कारोबार को फैलाने के लिए हरियाणा के उद्योगपति सुभाषचंद्र गोयल के साथ पार्टनरशिप की। 1992 में देश सैटेलाइट टेलीविजन एशिया टेलीविजन रिजन (STAR) के पांच निजी चैनलों की शुरूआत हो गई। लेकिन चौबीसो घंटे समाचार दिखाने वाले चैनल की शुरूआत 1998 में स्टार-एनडीटीवी से हुई। राष्ट्रीय समाचार चैनल की शुरुआत के कुछ साल बाद ही क्षेत्रीय समाचार चैनल भी शुरू होने लगे। छत्तीसगढ़ में सैटेलाइट समाचार चैनल ईटीवी मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ की शुरूआत 2002 में हुई। 2002 से दूरदर्शन केंद्र रायपुर द्वारा भी क्षेत्रीय समाचारों की बुलेटिन प्रसारित किए जाने लगे। 2003 में सहारा समय ने भी मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ नाम से क्षेत्रीय समाचार चैनल शुरू कर दिया। 2008 के बाद प्रदेश में समाचार चैनलों का विकास काफी तेजी से हुआ है। करीब एक दर्जन सैटेलाइट समाचार चैनल, तीन केबल नेटवर्क एवं सभी प्रमुख राष्ट्रीय समाचार चैनलों के ब्यूरो अथवा संवाददाता यहां कार्य कर रहे हैं।

मूल शब्द : समाचार चैनलों, संवाददाता, हैचिसन वैमपाओ।

प्रस्तावना

नई सदी में टेलीविजन समाचार का सबसे प्रमुख स्रोत बनकर उभरा है। राष्ट्रीय स्तर पर समाचार चैनलों का विकास 1998 से शुरू हुआ और 2007 तक बहुत तेजी से हुआ। लेकिन इसके बाद क्षेत्रीय समाचार चैनलों के विकास ने रफ्तार पकड़ी और संख्या में राष्ट्रीय समाचार चैनलों को बहुत पीछे छोड़ गई। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की रिपोर्ट 2017 के अनुसार देश में प्रसारण की अनुमति प्राप्त कुल 883 टेलीविजन चैनलों में 383 समाचार चनल हैं और शेष 495 समान्य मनोरंज कैटेगरी के चैनल हैं।

क्षेत्रीय समाचार चैनलों का सर्वाधिक विकास दक्षिण भारतीय राज्यों में हुआ है। आंध्रप्रदेश एवं तामिलनाडु जैसे राज्यों में क्षेत्रीय समाचार चैनलों की संख्या क्षेत्रीय भाषा के मनोरंजन चैनलों की

संख्या जितनी पहुंच चुकी है। हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा की कम ग्राह्यता एवं स्थानीय भाषा एवं वहां की संस्कृति की के समाचारों को देखने की उत्कंठा के कारण देश के अलग अलग राज्यों में क्षेत्रीय समाचार चनलों की शुरूआत हुई। यद्यपि देश के विभिन्न राज्यों में दूरदर्शन पर क्षेत्रीय भाषाओं में समाचारों का प्रसारण 70 और 80 के दशक से ही प्रारंभ हो चुका था, किंतु ये समाचार इतने नीरस, एकरूपता लिए और सरकारी कार्यक्रमों तक सीमित होते थे कि क्षेत्रीय समस्याओं की प्रस्तुति बहुत पीछे छूट जाती थी। साथ ही, दर्शक भी कभी दिल से नहीं जुड़ सके। इसलिए 90 के दशक में निजी चैनलों की शुरूआत के साथ जब उन पर कुछ समाचार बुलेटिन भी दिखाने शुरु किए गए तो इसका व्यापक असर हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु क्षेत्रीय स्तरों पर समाचारों के प्रति दर्शकों में जबरदस्त रुझान दिखाई। दूरदर्शन के सरकारी समाचार से अलग बेबाक, अधिक खुलापन लिए समाचारों ने क्षेत्रीय भाषाओं में भी 24 घंटे के समाचार चैनलों के विकास के रास्ता खोल दिए। 21वीं सदी की शुरूआत के साथ दक्षिण भारत एवं पूर्वोत्तर राज्यों समेत देश के प्रत्येक राज्य में क्षेत्रीय समाचार चैनल की शुरूआत हुई।

छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीय सैटेलाइट समाचार चैनल 2000 के बाद ही शुरू हुए। खनिज संसाधन में देश का सबसे संपन्न राज्य नक्सलवाद जैसी राष्ट्रीय समस्या का गढ़ भी साबित हुआ। 45 प्रतिशत भूभाग पर घने जंगलों से आच्छादित प्रदेश में नक्सलियों की बंदूके आग उगल रही थी और राष्ट्रीय मीडिया टीआरपी के गणित में उलझा दूर कहीं सोता दिख रहा था। तब प्रदेश की पीड़ा को यहां के क्षेत्रीय मीडिया ने आवाज दी। नक्सलियों के हाथों मरते आदिवासियों की चीख धीरे धीरे राष्ट्रीय मीडिया को भी सुनाई देने लगी। इसमें प्रदेश के क्षेत्रीय मीडिया, विशेषकर टेलीविजन चैनलों का का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे में प्रदेश के टेलीविजन के विकासक्रम का क्रमिक अध्ययन स्वंय में महत्वपूर्ण हो जाता है।

छत्तीसगढ़ में समाचार चैनल : क्रमिक अध्ययन

छत्तीसगढ़ राज्य का गठन 1 नवंबर 2000 को हुआ। इससे पहले यह अविभाजित मध्यप्रदेश का हिस्सा था। अलग राज्य बनने के तुरंत बाद समाचार चैनलों के ब्यूरो या ऑफिस खुलने शुरू हो गए थे। इसमें क्षेत्रीय चैनल ही नहीं, बल्कि स्टार-एनडीटीवी, जी, और आजतक चैसे राष्ट्रीय चैनल भी आगे थे। राज्य बनने से पहले दूरदर्शन केंद्र रायपुर ही एकमात्र टेलीविजन चैनल हुआ करता था जिस पर समसामयिकी विषयों पर आधारित स्थानीय एवं क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रसारित किया जाता था। राज्य बनने तक इस पर समाचारों का प्रसारण नहीं किया जाता था। नया राज्य बनने के बाद समाचार चैनल के रूप में सबसे पहले ईटीवी नेटवर्क ने कदम रखा। 2001 में इसने तेलुगू समाचार चैनल पर छत्तीसगढ़ के समाचारों को प्रसारित करना शुरू किया जिसे बाल्को समेत कई औद्योगिक क्षेत्रों में तेलुगूभाषी लोग बड़े चाव से देखते थे। 2002 में ईटीवी ने मध्यप्रेदश और छत्तीसगढ़ के समाचारों को दिखाने वाला समाचार चैनल शुरू किया। इसी साल दूरदर्शन केंद्र रायपुर द्वारा भी समाचारों का प्रसारण शुरू हुआ। 2003 में सहारा समय ने मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ का क्षेत्रीय समाचार चैनल शुरू कर दिया। इसी साल केबल नेटवर्क के जरिए प्रसारित होने वाला आकाश चैनल भी शुरू हुआ। प्रदेश में समाचार चैनलों की संख्या तेजी से बढ़नी शुरू हुई। राज्य गठन के डेढ़ दशक बाद प्रदेश में करीब दर्जन समाचार चैनल प्रसारित हो रहे हैं।

दूरदर्शन केंद्र रायपुर

जब छत्तीसगढ़ अलग राज्य नहीं बना था तभी 1977 में रायपुर दूरदर्शन केंद्र की शुरूआत हो गई थी। तब इसकी शुरूआत साइट की उत्तरवर्ती सेवा के रूप में गांवों के लिए कार्यक्रमों के प्रसारण के उद्देश्य से हुई थी। एक किलोवाट के हाइपावर

ट्रांसमीटर के जरिए इसका प्रसारण शुरू हुआ। 1985 में सैटेलाइट के जरिए सामुदायिक कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हुआ। 1987 में उपग्रह के जरिए रायपुर दूरदर्शन केंद्र द्वारा, दूदर्शन केंद्र दिल्ली से सारे कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू कर दिया गया। 1992 में रायपुर दूरदर्शन केंद्र में 2 कैमरा के सेटअप वाला स्टूडियो शुरू हुआ और 1995 से स्थानीय कार्यक्रमों का प्रसारण भी शुरू हो गया। इस नाते छत्तीसगढ़ का इसे पहला क्षेत्रीय चैनल भी कहा जा सकता है। 1998 से रायपुर केंद्र से सप्ताह के पांच दिन, डेढ़ घंटे स्थानीय कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हुआ। 2002 में डिजिटल अर्थ स्टेशन ने काम करना शुरू कर दिया। इसके चलते इसकी क्वालिटी काफी अच्छी हो गई।

दूरदर्शन केंद्र रायपुर में 2002 में क्षेत्रीय समाचार एकांश की स्थापना हुई। समाचारों के प्रसारण के लिए अलग सेटअप तैयार किया गया। इसी के साथ सैटेलाइट और केबल सुविधा से विहीन छत्तीसगढ़ के सुदूर क्षेत्रों में लोगों को राज्य के प्रादेशिक एवं स्थानीय समाचार देखने को मिलने लगे। दूरदर्शन केंद्र रायपुर द्वारा प्रतिदिन शाम सवा छह बजे से साढ़े 6 बजे तक 15 मिनट का समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जाने लगा। 2006 से स्थानीय कार्यक्रमों की अवधि और बढ़ा दी गई। सोमवार से शनिवार के बीच हर दिन चार घंटे का क्षेत्रीय प्रसारण शुरू किया गया।

नई सदी में तकनीक का विकास बहुत तेजी से हुआ लेकिन रायपुर दूदर्शन केंद्र ने इसे अपनाने में एक दशक से भी अधिक का वक्त ले लिया। 2002 में जब प्रदेश में शुरू हुए क्षेत्रीय समाचार चैनल सोनी कंपनी के पीडी 170 मॉडल कैमरे और थ्रीसीसीसीडी हैंडी कैम से त्वरित गति से घटनाओं को कवर करने में जुटे थे तब दूरदर्शन की टीम भारी भरकम बीटा कैमरे के सेटअप के साथ घटनाओं की कवरेज किया करती। 2008 में जब प्रदेश के आधा दर्जन समाचार चैनल इंटरनेट पर एफटीपी और ईमेल के जरिए विडियो फुटेज समाचार ऑफिस के मुख्यालय तक मंगवाने लगे थे, उस वक्त भी दूरदर्शन राज्य के दूर दराज के इलाकों से बस और ट्रेन के माध्यम से विडियो टेप मंगाया करता। रायपुर के आस पास के जिलों के संवाददाता स्वयं रायपुर दूरदर्शन केंद्र तक विडियो टेप पहुंचाने आते।

2013 के बाद रायपुर दूरदर्शन केंद्र ने ईमेल के माध्यम से विडियो मंगवाने शुरु किए। 2016 के बाद रायपुर दूरदर्शन केंद्र द्वारा दो समाचार बुलेटिन प्रसारित होने लगे हैं। पहले प्रसारित होने वाले सवा छह बजे के बुलेटिन अब साढ़े 6 से पौने छह बजे के बीच प्रसारित होते हैं। इसके अतिरिक्त एक बुलेटिन रात 8 बजे भी प्रसारित होता है जिसे भोपाल से मध्यप्रदेश दूरददर्शन पर प्रसारित किया जाता है। रायपुर दूरदर्शन केंद्र द्वारा प्रमुख रूप से विकास, राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचारों का प्रसारण किया जाता है। व्यक्तिगत आरोप आधारित राजनीतिक घटनाएं एवं अपराध समाचार बहुत कम प्रसारित किया जाता है। समाचारों की प्रस्तुति को लेकर भी यह चैनल निजी चैनलों की तुलना में कम आकर्षक है। पैकेज प्रारूप में समाचार बहुत ही कम प्रसारित किए जाते हैं। आज भी ड्राइ एंकर, एंकर विजुअल, या एंकर विजुअल बाइट प्रारूप में समाचार प्रसारित किए जाते हैं। फोनो, ब्रेकिंग, लाइव जैसे फॉर्मेट आज भी बहुत कम देखने को मिलते हैं।

ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़

राज्य गठन के तत्तकाल बाद ही यहां ईटीवी नेटवर्क ने अपना कदम रख दिया था। रायपुर के ही रहने वाले प्रणीव सिंह तब मुंबई में ईटीवी के लिए काम कर रहे थे। नए राज्य में ईटीवी नेटवर्क के विस्तार के इरादे से उन्हें मुंबई से रायपुर भेज दिया गया। प्रवीण सिंह अपने एक सहयोगी के साथ राजधानी रायपुर में ईटीवी के प्रतिनिधि के तौर पर काम करना शुरू कर दिए। लेकिन वो दिन आज की तरह आसान नहीं था। वह स्वयं ही 3सीसीडी कैमरे से घटनाओं को कवर करते। फिर टेप को हवाई जहाज से दिल्ली भेजा जाता। ईटीवी के दिल्ली ब्यूरो ऑफिस में वीसेट लगा हुआ था, जहां से फीड हैदराबाद रामोजी फिल्म सिटी स्थित चैनल के मुख्यालय भेज दिया जाता था। प्रवीण सिंह बताते हैं "साल 2000 के अंत में वो रायपुर आए थे। तब ईटीवी का छत्तीसगढ़ के लिए अलग से चैनल लॉच नहीं हुआ था। वो ईटीवी तेलुगू के लिए समाचार भेजा करते थे। बाल्को में बड़ी संख्या में आँध्रप्रदेश के लोग काम कर रहे थे। ईटीवी तेलुगू पर वो छत्तीसगढ़ के समाचारों को बड़े चाव से देखा करते। " तेलुगू चैनल के लिए जब राजनेताओं से बाइट लेने जाता था, तो वो बार-बार पूछते थे, हिंदी में चैनल कब आएगा। जब ईटीवी मध्यप्रदेश शुरू हुआ, तो ये लोग काफी खुश हुए। अब किसी घटना पर अपना पक्ष देने के लिए खुद ही बुलाने लगे थे।

करीब एक साल तक छत्तीसगढ़ के समचार ईटीवी तेलुगू के लिए संकलित किए जाते रहे। 2001 के अंत में ईटीवी ने मध्यप्रदेश नाम से चैनल शुरू करने की योजना बनाई। भोपाल ब्यूरो ऑफिस में स्टूडियो के साथ साथ वीसेट भी लगाया गया। छत्तीसढ़ के लिए रायपुर के आनंद नगर में ईटीवी का ब्यूरो ऑफिस बनाया गया। यहां भारतीय संचार निगम लिमिटेड से 2एमबी लीज लाइन लगवाई गई। ऑफिस में विडियो प्लेयर, मॉनिटर, फोन की सुविधाय उपलब्ध कराई गई। और इन्ही कुछ सीमित संसाधनों के साथ जनवरी 2002 से ईटीवी मध्यप्रदेश नाम से चैनल शुरू हो गया। नाम भले ही ईटीवी मध्यप्रदेश था, लेकिन इस पर मध्यप्रदेश के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के समाचारों को भी दिखाया जाता।

प्रफुल्ल पारे को भोपाल से रायपुर के पहले ब्यूरो चीफ बनाकर 2002 में भेजा गया। वो कहते हैं- "तब यह चैनल पूरी तरह समाचार चैनल नहीं था, बल्कि मनोरंजन कार्यक्रमों के साथ समाचार बुलेटिनों का मिश्रण था। दिन 6-7 समाचार बुलेटिन होते थे। इसका स्वरुप नेशनल और केबल चैनल के बीच का था। रायपुर और बिलासपुर में 2एमबी लाइन लगे थे। जिलों से संवाददात समाचारों के टेप को बस या ट्रेन से अपने निकटवर्ती 2एमबी सेंटर को भेजते थे। 2एमबी सेंटर में उन टेप को देखकर समाचार लिखे जाते। फिर समाचारों के विजुअल को 2एमबी सेंटर के जरिए भोपाल ब्यूरो भेजा जाता, जहां वीसेट लगा था। भोपाल से समाचारों को वीसेट के जरिए हैदराबाद भेज दिया जाता। हैदराबाद स्थित रामोजी फिल्म सिटी से ही समाचारों का संपादन और उसका प्रसारण होता।

शुरूआती दौर में समाचारों की एडिटिंग और प्रस्तुति साधारण होती थी। चैनल शुरू होने के करीब एक दशक तक ये अपने ही लय में चलता रहा। इसे कभी टीआरपी की चिंता सताती नजर नहीं आई। और ना ही दूसरे क्षेत्रीय समाचार चैनलों की तरह समाचार की सनसनीखेज प्रस्तुति या आक्रामक तेवर अपनाने की कोशिश की गई। 2008 में जब साधना न्यूज, जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ समेत कुछ और दूसरे चैनल शुरू हो गए, तो थोड़ी बहुत प्रतिस्पर्धा जगी। फिर भी यह चैनल टीआरपी और लोकप्रियता में बाद में आए दूसरे क्षेत्रीय चैनलों से पिछड़ता रहा। 2012 के बाद जब ये चैनल रामोजी राव के नियंत्रण से निकलकर ईटवी "टीवी 18" समूह का हिस्सा बन गया तब यहां टीआरपी की होड़ मची।

सहारा समय

2003 में विधिवत तरीके से लॉच होने वाला सहारा समय छत्तीसगढ़ का दूसरा क्षेत्रीय समाचार चैनल है, लेकिन असल मायनों में प्रदेश में टेलीविजन पत्रकारिता को इसी ने स्थापित किया। सहारा समूह द्वारा एक साथ लॉच किए गए कई क्षेत्रीय समाचार चैनलों में मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ सफलतम चैनल माना जाता है। जबरदस्त तैयारी और मंजे हुए पत्रकारों की टीम के साथ शुरू हुआ ये चैनल राष्ट्रीय चैनल के स्तर का था। इसकी आक्रमकता और समाचारों पर पकड़ ने प्रदेश में इसे शुरू होते ही बेहद लोकप्रिय बना दिया। इससे पहले शुरू हुआ ईटीवी इसके आगे टिक नहीं सका।

ईटीवी के साथ सबसे पहले जुड़े प्रवीण सिंह 2002 के नवंबर में सहारा चले गए। विडियो जर्नलिस्ट की जगह सहारा समय में उन्हें संवाददाता का जिम्मा सौंपा गया था। चैनल लॉच होने की तैयारी जोर शोर से चल रही थी। रायपुर कपड़ा मार्केट में ब्यूरो ऑफिस बनाया गया। यहां स्टूडियो तैयार किया गया। ब्यूरो में यहां वीसेट स्थापित किया। यहीं पर समाचारों की एडिटिंग कर, पैकेज तैयार करने के लिए की सुविधा दी गई। मुकेश कुमार को चैनल की बागडोर दी गई और छत्तीसगढ़ स्टेट ब्यूरो चीफ का जिम्मा देशबंधु अखबार के रुचिर गर्ग को सौंपा गया। तेज-तर्रार टीम और सबसे बेहतर तकनीक और संसाधनों के चलते ये चैनल शुरू होते ही प्रदेश में छा गया। प्रवीण सिंह के अनुसार ईटीवी में काम करते हुए लोग उनसे अक्सर प्रश्न

पूछते थे कि जब चैनल का नाम ईटीवी मध्यप्रदेश है तो छत्तीसगढ़ की बाइट क्यों ले रहे है? यानि लोग चैनल से जुड़ाव महसूस नहीं कर रहे थे। सहारा समय भी मध्यप्रदेश के नाम से लांच हुआ था। मैंने सुझाव दिया कि चैनल के नाम में मध्यप्रदेश के साथ छत्तीसगढ़ का नाम भी आना चाहिए। मेरा सुझाव मान लिया गया। फिर सहारा समय को देखते हुए करीब 6 महीने बाद ईटीवी ने भी मध्यप्रदेश के साथ छत्तीसगढ नाम को शामिल कर लिया।

आकाश चैनल- छत्तीसगढ़ के टेलीविजन पत्रकारिता में एक नाम आकाश चैनल का भी आता है। 2002 में इसकी शुरूआत हुई, लेकिन प्रदेश का ये चैनल केबल नेटवर्क के जरिए ही दिखाया जाता था। शुरूआत इसकी काफी शानदार रही। दिल्ली से प्रशिक्षित लोगों की टीम बुलाई गई। बेहतरीन तकनीक और सुविधाओं के साथ चैनल शुरू हुआ। लेकिन करीब दो सालों में ही चैनल बंद हो गया। बाद में इसी के सेटअप पर केबल समाचार एम चैनल शुरू हुआ, जो आगे चलकर केबल हिस्सेदारी में दो भागो में बंट गया। 2007 में केबल नेटवर्क पर ग्रांड समाचार चैनल की शुरूआत हुई। 2003 से 2008 तक क्षेत्रीय समाचार चैनलों का परिदृश्य ईटीवी और सहारा समय के आसपास ही घूमता रहा।

2008 का साल छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीय समाचार चैनलों के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा। इस साल विधानसभा चुनाव था। चुनाव से ठीक पहले कुछ महीनों में ही एक के बाद एक चैनल लॉच हो गए। इनमें साधना न्यूज मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़, वॉच न्यूज मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़, वॉयस ऑफ इंडिया मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ जैसे नाम शामिल हैं। और इन सबसे अलग, जी न्यूज की फ्रेंचाइजी के तौर पर शुरू हुए चैनल जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ रहा। सिर्फ छत्तीसगढ़ के समाचारों को प्रसारित करने वाला पहला और अब तक का इकलौता सैटेलाइट क्षेत्रीय चैनल बना। दूसरे अन्य क्षेत्रीय समाचार चैनल मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़, दोनों के संयुक्त चैनल होते थे।

साधना न्यूज- जुलाई 2008 में साधना न्यूज मध्यप्रदेश-छत्तीसढ़ चैनल की शुरूआत हुई। इसका हेड ऑफिस दिल्ली में है। रायपुर के देवेंद्रनगर में ब्यूरो ऑफिस खोला गया। यहां एक कमरे में छोटा सा स्टूडियो बनाया गया, जहां से लाइव किया जा सके। ब्यूरो ऑफिस में वीसेट स्थापित किया गया। बाहर के लोकेशन से सीधा प्रसारण के लिए ओबी वैन दिया गया। प्रदेश के सभी जिलों में स्ट्रिंगर्स की नियुक्ति की गई, जो एफटीपी के जरिए समाचारों के फीड सीधे दिल्ली स्थित चैनल के मुख्यालय भेजते थे। शुरूआती समय में साधना न्यूज की कमान वर्षों तक सहारा समय में रहे प्रभात डबराल के हाथों में थी। सीमित संसाधनों के बावजूद, साधाना न्यूज ने छत्तीसगढ़ में स्थापित सहारा समय को कड़ी चुनौती दी। सबसे पहले खबरों को ब्रेक करना और सबसे पहले समाचारों के विजुअल प्रसारित कर देना इसकी रणनीति रही। लेकिन ढाई साल बाद प्रभात डबराल के चले जाने के बाद इसकी स्थिति गिरती चली गई। आज भी यह चैनल चल रहा है, लेकिन ऐसे जैसे कोई अस्तित्व ना हो।

वॉच न्यूज- 2008 में वॉच न्यूज मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ चैनल भी शुरू हुआ। लेकिन करीब दो साल में ही बंद भी हो गया। राजधानी रायपुर में चैनल का मुख्यालय बनाया गया। यहीं से समाचारों का प्रसारण किया जाता। सभी जिलों में संवाददाताओं की नियुक्ति की गई। रायपुर मुख्य ऑफिस में राजधानी के कई वरिष्ठ पत्रकारों को ऊंचे वेतन पर बुलाया गया। दैनिक भास्कर के संपादक रह चुके दिवाकर मुक्तिबोध को चैनल का संपादक बनाया गया। लेकिन पूरी टीम में टेलीविजन चैनल के कम का अनुभव और वित्तीय कुप्रबंधन के चलते चैनल असमय ही बंद हो गया। किसी क्षेत्रीय समाचार चैनल पर छत्तसीगढ़ी में समाचार बुलेटिन शुरू करने का श्रेय भी इसी चैनल को जाता है, जिसे बाद में सभी प्रमुख क्षेत्रीय समाचार चैनलों ने अपनाया।

वॉयस ऑफ इंडिया- वॉयस ऑफ इंडिया का नाम भारतीय टेलीविजन पत्रकारिता में एक हादसे के तौर पर लिया जाता है। इसका जितना धमाकेदार आगाज था, उतना ही त्रासदपूर्ण अंत हुआ। वॉयस ऑफ इंडिया मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के नाम से 2008 में क्षेत्रीय समाचार चैनल लॉच किया गया। रायपुर के कालीबाड़ी स्थित एक कॉम्प्लेक्स में ब्यूरो ऑफिस खोला गया। आनन-फानन में सभी जिलों में स्ट्रिंगर्स रखे गए। चैनल ठीक से शुरू भी नहीं हआ था कि वेतन ना मिलने का विवाद जोर पकड़ने लगा। और फिर चंद महीनों में ही यह चैनल बंद हो गया।

जी 24 घंटे छत्तीसगढ़- साल 2008 छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय टेलीविजन पत्रकारिता के लिए हमेशा याद किया जाएगा। इस साल ना सिर्फ सबसे ज्यादा चैनल शुरू हुए, बल्कि इसी साल सिर्फ छत्तीसगढ़ प्रदेश के समाचारों को दिखाने वाला पहला सैटेलाइट चैनल जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ भी लॉच हुआ। राष्ट्रीय समाचार चैनल जी न्यूज की फ्रेंचायजी के तौर पर इसकी शुरूआत प्रदेश के जाने माने कारोबारी सुरेश गोयल ने की थी। यह चैनल पहला ऐसा प्रादशिक सैटेलाइट चैनल भी बना, जिसका प्रसारण भी छत्तीसगढ़ से ही होता है। राजधानी रायपुर में चैनल का हेड ऑफिस तैयार किया गया। जिले स्तर पर संवाददाताओं और स्ट्रिंगर्स को नियुक्त किया गया। जी न्यूज की फ्रेंचायजी होने के चलते इसके पास राष्ट्रीय समाचार के लिए जी न्यूज नेटवर्क का पूरा पूरा लाभ मौजूद था। चैनल शुरू होने से पहले इसकी टीम को दिल्ली में जी न्यूज की ओर से ट्रेनिंग भी दी गई। यहां तक कि राज्य के स्ट्रिंगर्स को भी बाकायदा स्क्रिप्टिंग, विडियो, कैमरा की ट्रेनिंग दी गई। इतनी तैयारी से अब तक कोई भी क्षेत्रीय समाचार चैनल नहीं शुरू हुआ था। संसाधन के मामलेमें भी ये सबसे आगे थे। राज्य के संवाददाताओं के नेटवर्क के अलावा अंबिकापुर, रायगढ़, बिलासपुर, भिलाई और जगदलपुर में ब्यूरो ऑफिस खोला गया, जहां वीसेट लगाया गया। इन ब्यूरो ऑफिस से लाइव किया जाने लगा। चैनल के सारे स्टाफ गोयल ग्रुप के ही रहे, लेकिन इसके संपादक जी न्यूज की ओर से नियुक्त किए गए। जी न्यूज अपने ब्रांड नाम को एक स्तर पर मेंटेन करना चाहता था। जी न्यूज ने जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ चैनल को कई सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध कराए थे।

1 अगस्त 2008 को चैनल लॉच हुआ और कुछ ही महीनों में ये चैनल पूरी तरह छा गया। जी न्यूज के डिश प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होने के साथ टाटा स्काई, एयरटेल, विडियोकॉन प्लेटफॉर्म भी उपलब्ध था। साथ ही, प्रदेश के अमूमन सारे केबल नेटवर्क के जरिए भी चैनल दिखाया जाता। इसकी पहुंच प्रदेश के कोने कोने में हो गई थी। हमर माटी हमर गोठ समाचार बुलेटिन छत्तीसगढ़ी में प्रस्तुत किया जाता। मोर माटी के रंग में प्रदेश के लोक कलाकारों की प्रस्तुति को दिखाया जाता। ये कार्यक्रम प्रदेश में काफी लोकप्रिय हुए। पांच सालों तक ये चैनल प्रदेश का सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल बना रहा। जी न्यूज के साथ पांच सालों का करार 31 मार्च 2013 को खत्म हो रहा था। लेकिन गोयल ग्रुप ऑफ कंपनी ने इसे और जारी करने के बजाए अपना ब्रांड नाम से इसे शुरू रखने का फैसला किया गया। 28 मार्च 2013 को गोयल ग्रुप ऑफ कंपनी ने IBC 24 (आईबीसी 24) नाम से रिलांच कर दिया। जी न्यूज से आए संपादक अभय किशोर आईबीसी 24 में ही रह गए। चैनल के फेस एंकर भी इसी के साथ बने रहे । करीब दो महीने बाद ही छत्तीसगढ़ के इतिहास में ही नहीं, बल्कि पूरे देश के इतिहास में नक्सलियों का सबसे बड़ा राजनीतिक हमला सामने आया। कांग्रेस पार्टी के काफिले पर हमला कर नक्सलियों ने पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल, तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष नंदकुमार पटेल, उनके बेटे दिनेश पटेल, आदिवासी नेता महेंद्र कर्मा समेत 28 नेता और पुलिस वालों की हत्या कर दी। इस घटना की आईबीसी 24 ने जैसी कवरेज की, उसके आगे दूसरा कोई चैनल नहीं टिक सका। चैनल की टीम उस वक्त घटना स्थल पर पहुंच गई, जब नक्सली आसपास ही मौजूद थे। आईबीसी 24 ने ग्राउंड जीरो से हमले मे मारे गए लोगों और घायलों की तस्वीर दिखाकर पूरे छत्तीसगढ़ को ही नहीं बल्कि देशभर को स्तब्ध कर दिया। कई राष्ट्रीय समाचार चैनलों ने आईबीसी 24 की दिखाई जा रही तस्वीर को अपने अपने चैनल पर दिखाने शुरू कर दिए। इस घटना की अमूमन हर अपडेट में यह चैनल आगे बना रहा। कहते हैं इस घटना ने आईबीसी 24 को प्रदेशभर में स्थापित कर दिया। आईबीसी 24 होने के कुछ दिनों बाद ही ये चैनल भी बाकि दूसरे क्षेत्रीय समाचार चैनलों की तरह मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ को कवर करने वाला बन गया। आज टाटा स्काई, एयरटेल, डिश टीवी, विडियोकॉन जैसे डीटीएच प्लेटफॉर्म के साथ साथ प्रदेश के केबल नेटवर्क पर चैनल तो दिखता ही है, इसकी अपनी वेबसाइट और मोबाइल ऐप है, जिससे चैनल लाइव देखा जाता है।

भारत समाचार (2009)- 2008 के चुनावी वर्ष में यह चैनल भी क्षेत्रीय समाचार चैनलों की दुनिया में उभरा, लेकिन कोई नाम कमाने से पहले दूसरे, तीसरे हाथों में बिकते हुए बंद हो गया। ये चैनल मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के समाचारों को कवर करता था। रायपुर में शांतिनगर में इसका ब्यूरो ऑफिस खोला गया था।

खबर भारती (2011)- 2011 में ये चैनल बड़े जोर शोर के साथ शुरू हुआ। नोएडटा में इसका हेड ऑफिस खोला गया। छत्तीसगढ़ के लिए रायपुर के कलर्स मॉल स्थित एक फ्लोर पर इसका ब्यूरो ऑफिस बनाया गया और पूरे प्रदेश में संवाददाता एवं स्ट्रिंगर्स की तैनाती की गई। लेकिन ये चैनल अब तक के क्षेत्रीय समाचार चैनलों में बिल्कुल अलग तरह का प्रयोग था। ये चैनल ना राष्ट्रीय था और न ही क्षेत्रीय चैनलों के प्रचलित फॉर्मेट में फिट बैठता था। ये चैनल मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के समाचार को दिखाता था। मध्यप्रदेश से अलग होने के चलते छत्तीसगढ़ के लोग एक हद तक मध्यप्रदेश के साथ थोड़ा बहुत जुड़ा महसूस करते हैं, इसलिए मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ की संकल्पना स्वीकार भी हो जाती है, लेकिन छत्तीसगढ़ के साथ मध्यप्रदेश और राजस्थान के समाचारों को दिखाए जाने का प्रयोग असफल साबित हुआ। अच्छी तैयारी के बावजूद चैनल ज्यादा दिनों तक नहीं चल सका. छत्तीसगढ़ में कम अनुभवी और नए लोगों की टीम के चलते भी चैनल कुछ खास परफॉर्म नहीं कर सका।

बंसल न्यूज (2012)- मध्यप्रदेश में मेडिकल कॉलेज और प्रॉपर्टी के क्षेत्र में नाम कमा चुकी कंपनी बंसल ने, 2012 में बंसल न्यूज मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ शुरू किया। इसका हेड ऑफिस भोपाल में ही रखा गया। छत्तसीगढ़ में इसकी शुरूआत बिना किसी तैयारी के ही कर दी गई। कुछ और नए और कुछ पुराने लोगों को रख लिया गया। लेकिन चैनल कोई खास जगह नहीं बना सका। 2013 में ग्रुप ने जोर शोर से तैयारी की और छत्तीसगढ़ में प्रफुल्ल पारे को स्टेट ब्यूरो चीफ बनाया। पुराने लोगों को जोड़ा गया और फिर चैनल चल निकला। यह चैनल मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ की संयुक्त टीआरपी में कई बार नंबर एक स्थान पर रह चुका है। इस क्षेत्रीय समाचार चैनल ने छत्तीसगढ़ में पहली बार मोबाइल लाइव यूनिट का इस्तेमाल किया। बाकि दूसरे चैनल ओबी वैन से बाहर किसी घटना को लाइव किया करते थे। लेकिन बंसल न्यूज की टीम लाइव यूनिट को पीठ पर लादकर किसी रैली, भीड़ या संकरी गलियों में घुस जाती और उसका लाइव प्रसारण कर देती। ऐसा ओबी वैन से लैस दूसरे न्यूज चैनल की टीम नहीं कर पाते थे। इसी चैनल ने व्हाट्स ऐप के जरिए भी अपने संवाददाताओं से घटनाओं की छोटी-छोटी क्लिपिंग मंगाकर उसे चलाना शुरू किया। विजुअल की कवालिटी भले ही कम थी, लेकिन सबसे पहले घटनाओं को तस्वीर के साथ दिखा देने की रणनीति काम कर गई। इन सबके चलते चैनल ने मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ की संयुक्त टीआरपी चार्ट में अपनी खास जगह बना लिया। हालांकि, सैटेलाइट चैनल होने के बावजूद यह किसी डीटीएच प्लेटफॉर्म पर मौजूद नहीं है। फिर भी इस चैनल की अपनी वेबसाइट और मोबाइल ऐप जरुर है.

पी 7- पर्ल्स न्यूज ब्रॉडकास्टिंग कंपनी ने 2009 में जब अपना राष्ट्रीय चैनल शुरू किया, तो छत्तीसगढ़ में भी अपने संवाददाता रखे। अजय शर्मा छत्तीसगढ़ में चैनल के प्रतिनिधि बनाए गए। शंकरनगर स्थित एक मकान में एक छोटा सा स्टूडियो, तीन चार कंप्यूटर के साथ ब्यूरो ऑफिस खोला गया। एक संवाददाता और रखा गया। इस तरह चैनल की उपस्थिति दर्ज हो गई। चैनल के बारे में आम चर्चा ये भी रही कि छत्तसीसगढ़ में फैले कंपनी के चिटफंड कारोबार को संरक्षित करने के ईरादे से शुरू हुआ था। चैनल विस्तार के अगले पड़ाव में पर्ल्स ब्रॉडकास्टिक कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने क्षेत्रीय चैनल लॉच किये। 2013 में छत्तीसगढ़-मध्यप्रदेश का भी रिजनल चैनल लॉच हुआ। समरेंद्र शर्मा रिजनल चैनल में स्टेट ब्यूरो हेड बनाए गए। कुछ और संवाददाता और कैमरामैन रखे गए। प्रदेश के जिलों में भी स्ट्रिंगर्स की टीम तैनात कर दी गई। चैनल का ब्यूरो ऑफिस भी शंकरनगर के मकान से शिफ्ट कर पंडरी स्थित श्याम प्लाजा में शिफ्ट कर दिया गया। लेकिन यह रिजनल चैनल कुछ कर पाता, उससे पहले ही चिटफंड कंपनी का मामला सामने आ गया। निवेशकों का पैसा ना लौटाने के चलते देशभर में पर्ल्स ग्रुप की कंपनियों पर छापे पड़ने लगे। एक तरफ सेबी ने शिकंजा कर दिया, दूसरी तरफ राज्यों की पुलिस ने चिटफंड ऑफिस के मैनेजरों पर मामले दर्ज करने शुरू कर दिए। चैनल का वित्तीय स्रोत बंद होने लगे। लोग वेतन ना मिलने के चलते छोड़कर जाने लगे। फिर 2015 में नेशनल चैनल के साथ-साथ छत्तीसगढ़ का रिजनल चैनल भी बंद हो गया।

इंडिया न्यूज (2013)- 2013 में इंडिया न्यूज के साथ जाने माने पत्रकार दीपक चैरसिया के जुड़ जाने के बाद काफी आक्रामक अंदाज में मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ में इसका रिजनल चैनल लॉच किया गया। इसका मुख्यालय नोएडा में है। नेशनल चैनल के लिए दीपक चैरसिया के कार्यक्रम का प्रसारण क्षेत्रीय समाचार चैनल पर भी किया जाता। धारदार, और तीखे तेवर वाले कार्यक्रम के चलते चैनल जल्दी प्रदेश की जनता के बीच चर्चित हो गया। रायपुर के शांतिनगर स्थित एक मकान में चैनल का ऑफिस बनाया गया। जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ से आए सत्येंद्र सिंह को स्टेट ब्यूरो चीफ बनाया गया। लाइव के लिए वीसेट या ओबी वाइव का इस्तेमाल नहीं होता, बल्कि थ्रीजी नेवटवर्क पर काम करने वाला लाइव यू तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। फीड फेजने के लिए लाइव यू और एफटीपी का प्रयोग किया जाता है। धमाकेदार शुरूआत के बाद भी चैनल तेजी से जोर नहीं पकड़ा। बाद में चैनल की कमान दीपक चैरसिया की बहन दिप्ती चैरसिया के हाथों में चला गया। आज भी यह चैनल चल रहा है लेकिन टीआरपी की टॉप 5 चार्ट में अपनी जगह शायद ही कभी बना पाया हो।

जी 24 घंटे मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ (2013) - 2008 से ही पूरे छत्तसीगढ़ में जी 24 घंटे का नाम बतौर नंबर वन चैनल के रुप में स्थापित हो चुका था। 2013 में गोयल ग्रुप से करार खत्म हो जाने के बाद जी ग्रुप ने अपना रिजनल चैनल लॉच करने की तैयारी की। और 31 मार्च 2013 को डिश टीवी के उस चैनल नंबर पर अपना चैनल शुरू कर दिया, जहां एसबी मल्टीमीडिया द्वारा संचालित उसका फ्रेंचायजी चैनल चला करता था। चैनल शुरू होते ही उसे ये बड़ा लाभ मिला। रायपुर के राजीव नगर स्थित एक अपार्टमेंट में चैनल का ब्यूरो ऑफिस बनाया गया। स्टूडियो के साथ साथ वीसेट स्थापित किया गया। राष्ट्रीय चैनल का नाम होने के चलते प्रदेश के जिलों में भी अच्छे अच्छे लोग इसके साथ जुड़े। हालांकि, राजधानी में रिपोर्टर की कोई बड़ी टीम नहीं रखा। ब्यूरो प्रमुख के अलावा तीन और रिपोर्ट रखे गए। बाद में तो कई महीनों तक सिर्फ दो ही रिपोर्टर के जरिए ब्यूरो का काम चलता रहा। चैनल हर छोड़ बड़ी घटनाओं को कवर करने की बजाए, कुछ बड़ी या अलग घटनाओं को प्रमुखता और तेवर के साथ चलाने की रणनीति पर काम करता है। विषयों पर बहस और चर्चा कराकर दर्शकों को अपनी ओर खींचता है। इस तरह, समाचार कंटेट के लिहाज से ये चैनल उतना समृद्ध नहीं होने के बावजूद छत्तीसगढ़ में यह चैनल नंबर वन बन गया। इसकी वजह जी न्यूज के अपने डीटीएच प्लेटफॉर्म डिश टीवी पर होने और प्रदेश में पहले से ही स्थापित इसके नाम को माना जाता है।

न्यूज एक्सप्रेस (2014)- काफी दिनों से चैनल लॉच करने की खबरों के बीच 2014 में साई प्रसाद ग्रुप ने न्यूज एक्सप्रेस नाम से मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ में भी रिजनल चैनल लॉच किया। हालांकि, इसका नेशनल चैनल दो साल पहले ही लॉच किया जा चुका था। छत्तीसगढ़ में स्टेट हेड की जिम्मेदारी संजय दीक्षित के हाथों में सौंपी गई। टीम अच्छी थी लेकिन टीम और चैनल कुछ अच्छा करते उससे पहले ही चिटफंट कंपनी का चेहरा सामने आ गया। निवेशकों को वक्त पर पैसा नहीं लौटा पाने के चलते सेबी ने साई प्रसाद कंपनी पर शिकंजा कस दिया। चैनल का वित्तीय स्रोत बंद हो गया और नेशनल चैनल के साथ रिजनल चैनल भी बंद हो गया। हालांकि, मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय समाचार चैनल को बंद होने से पहले ही दूसरे ग्रुप ने खरीद लिया और कुछ सालों तक यह चैनल स्वराज एक्सप्रेस के नाम से चलता रहा। लेकिन एक बार फिर दूसरे के हाथों में चैनल बिक गया। फिलहाल यह चैनल एसएमबीसी चैनल के साथ साझेदारी कर प्रसारित हो रहा है।

संदर्भ सूचि

1. कश्यप, श्याम एवं कुमार, मुकेश (2008). टेलीविजन की कहानी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन,।

2. सिंह, देवव्रत (2010). भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया. दिल्ली : प्रभात प्रकाशन ।
3. राव, बी.एस.एस. (1992). टेलीविजन फॉर रुरल डेवलपमेंट. नई दिल्ली : कॉनसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी ।
4. गुप्ता, निलंजना (1998). स्विचिंग चौनल्स : आईडियोलॉजी ऑफ टेलीविजन इन इंडिया. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. लूथरा, एच. एल. (1986). इंडियन ब्रॉडकास्टिंग. नई दिल्ली : एमआईबी, भारत सरकार।
6. Deloitte-ASSOCHAM INDIA (2011). Media & Entertainment in India: Digital Road Ahead. Retrieved from http://www.academia.edu/5019860/Media_and_Entertainment_in_India_Digital_Road_Ahead
7. KPMG-FICCI (2016). The future now streaming: Indian Media and Entertainment Industry Report. Pp 47-51 Retrieved from https://home.kpmg.com/content/dam/kpmg/pdf/2016/04/The-Future-now-streaming.pdf
8. Mehta, Nalin (2008). India on Television. New Dehli: HarperCollins Publishers India,
9. MIB (2017). Permitted private satellite television in India. Retrieved from http://mib.nic.in/sites/default/files/Master%20List%20of%20Permitted%20Private%20%20statellite%20TV%20Channels%20as%20on%2031.05.2017_0.pdf
10. Ninan, Sevanti (1995). Through the magic window: Television and changes in India. Dehli: Penguin books.
11. Selvan KS. (2016). Tv news scenario in South India. In Vasanti. P.N., & Kumar. Prabhakar (Ed.), Tv news channels in India: Business, Content and Regulation. (pp. 95-110). New Delhi: Academic foundation.
12. TAM REPORT (2011). What India is watching? Retrieved from http://www.business-standard.com/content/general_pdf/032511_01.pdf